CHAPTER 13

सुमिरिनी के मनके

PAGE 84, प्रश्न और अभ्यास

(क) बालक बच गया

12:1:13:प्रश्न और अभ्यास - बालक बच गया :1

बालक से उसकी उम्र और योग्यता से ऊपर के कौन-कौन से प्रश्न पूछे गए?

उत्तर - बच्चे से पूछे गए सभी प्रश्न उसकी उम्र और क्षमता से ऊपर थे। जैसे कि धर्म की विशेषताओं, रसों के नाम और उनके उदाहरण, पानी के चार डिग्री और चंद्रग्रहण के तहत ठंडा होने के बाद भी मछली कैसे जीवित रहती है। वैज्ञानिक होने के सवाल आदि उनकी उम्र के हिसाब से बहुत बड़े और गंभीर थे।

12:1:13:प्रश्न और अभ्यास - बालक बच गया :2

बालक ने क्यों कहा कि मैं यावज्जन्म लोकसेवा करूँगा?

उत्तर - बालक ने कहा कि "मैं यावज्जन्म लोकसेवा करूँगा" क्यौंकी उसके पिता ने यह वाक्य उसे रटा दिया था। यह पंक्ति जो भी व्यक्ति बोलता है उसे वाहवाही मिलती है इस लिए उसके पिता ने उसे ये पंक्ति रता दिया जिस से उसके बच्चे को वाहवाही मिले।

12:1:13:प्रश्न और अभ्यास - बालक बच गया :3

बालक द्वारा इनाम में लड्डू माँगने पर लेखक ने सुख की साँस क्यों भरी?

उत्तर - जब लेखक को बच्चे से मिलवाया गया, तो उसे एक सामान्य बच्चे की तरह महसूस हुआ। लेकिन जब लेखक ने देखा कि बच्चे को एक सवाल का जवाब देना था जो उसकी उम्र से बड़ा था, तो लेखक को बहुत दुख हुआ। लेखक समझ गया कि बचपन से ही उसके पिता ने उसे इतना प्रतिभाशाली बना दिया है कि सब उसे योग्य कहे है। इस कारण से बच्चे का बचपन समाप्त हो जाता है, उसके पिता ने उसका बचपन समाप्त कर लिया है। एक बच्चे के लिए शिक्षा बहुत महत्वपूर्ण है। लेकिन उसे खेलने कूदने से रोकना बच्चे और

समाज के लिए सुखदायक नहीं है। जब बच्चे ने इनाम में एक लड्डू मांगा, तो लेखक ने खुशी की सांस ली। यह एक बच्चे के लिए स्वाभाविक था। एक बच्चे से ऐसी ही उम्मींद की जा सकती है। अभी भी उसके अंदर एक बच्चा जीवित है।

PAGE 85

12:1:13:प्रश्न और अभ्यास - बालक बच गया :4

बालक की प्रवृत्तियों का गला घोंटना अनुचित है, पाठ में ऐसा आभास किन स्थलों पर होता है कि उसकी प्रवृत्तियों का गला घोटा जाता है?

उत्तर - निम्नलिखित स्थलों पर पता चलता है कि बालक की प्रवृतियों का गला घोंटना अनुचित है

(क) जब श्री हादी के सामने आठ साल के बच्चे को प्रदर्शनी के लिए ले जाया गया था।

(ख) जब बालक को सभी लोग घेरकर प्रश्न करते है और बालक के लिए प्रश्न समझना मुश्किल होता है।

(ग) बालक से इस प्रकार के प्रश्न के लेखक असहज हो गए। वह बालक प्रश्नो के उत्तर निचे देखक रहा था। उसका चेहरा पीला पद गया था और आँखे डर से सफेद हो गयी थी। ।

(घ) किसी ने भी यह उपेक्षा नहीं की थी कि इनाम मांगने पर वह बालक लड्डू की मांग करेगा। जब उसने अपने बालपन कारण लड्डू की मांग की तो सभी बड़ों की आंखे बुझ गयी।

12:1:13:प्रश्न और अभ्यास - बालक बच गया :5

"बालक बच गया। उसके बचने की आशा है क्योंकि वह लड्डू की पुकार जीवित वृक्ष के हरे पत्तों का मधुर मर्मर था, मरे काठ की अलमारी की सिर दुखानेवाली खड़खड़ाहट नहीं" कथन के आधार पर बालक की स्वाभाविक प्रवृत्तियों का उल्लेख कीजिए।

उत्तर - एक छोटे बच्चे के अंदर बालपन होता है जैसे - खेलना कूदना , चंचल होना, छोटी-छोटी चीजे पाकर खुश होना। अगर एक बालक काम उम्र में ये सब छोड़कर बड़े बड़े प्रश्नो के उत्तर देना शुरू कर दे तो यह चिंता का विषय होता है।

12:1:13:प्रश्न और अभ्यास - बालक बच गया :6

उम्र के अनुसार बालक में योग्यता का होना आवश्यक है किन्तु उसका ज्ञानी या दार्शनिक होना जरुरी नहीं है। 'लर्निंग आउटकम ' के बारे में विचार कीजिये।

उत्तर - उम्र के अनुसार बालक में योग्यता का होना आवश्यक है। परन्तु उस बालक से इतना ज्ञान की उमींद करना जैसे वो एक दार्शनिक या ज्ञानी हो तो यह गलत है। आज कल के माँ और पिता अपने बच्चे को समाज में अवव्वल रखने के लिए तरह तरह के प्रशिक्षण दिलाते है। इन प्रशिक्षणों में ही बच्चे का जीवन खत्म हो जाता है। उसका बचपन खो जाता है। बचो के विकास के लिए हर चीज आवश्यक है। पढ़ाई के साथ साथ उनका खेलना कूदना, घूमना-फिरना तथा मित्रों से मिलना इत्यादि।

(ख) घड़ी के पुर्जे

12:1:13:प्रश्न और अभ्यास - घडी के पुर्जे :1

लेखक ने धर्म का रहस्य जानने के लिए 'घड़ी के पुर्ज़े' का दृष्टांत क्यों दिया है?

उत्तर - लेखक ने धर्म को घडी के पुर्जे से समझाया है। लेखक कहते है की जिस प्रकार घडी को पहनने वाला अलग व्यक्ति होता है तथा उसे बनाने वाला अलग व्यक्ति उसी प्रकार आज के समाज में धर्म को मानने वाला अलग है और उसकी ठेकेदारी करने वाला अलग। घडी पहनने वाला घडी खोलकर सही नहीं करता है क्योँकि उसे लगता है की वो नहीं करता जबकि अगर वह प्रयास करे तो कर सकता है। इसी प्रकार धर्म को मानने वाला सोचता है की सारा ज्ञान उसके गुरुओं के पास है वह स्वंम कुछ नहीं कर सकता है। जबकि अगर वह स्वंम चाहे तो धर्म का ज्ञान पा सकता है।

12:1:13:प्रश्न और अभ्यास - घडी के पुर्जे :2

'धर्म का रहस्य जानना वेदशास्त्रज्ञ धर्माचार्यों का ही काम है।' आप इस कथन से कहाँ तक सहमत हैं? धर्म संबंधी अपने विचार व्यक्त कीजिए।

उत्तर - मैं इस कथन से सहमत नहीं हूँ। धर्म को सिर्फ वेदशास्त्री ही नहीं अपितु कोई भी जान सकता है। धर्म को जानने के लिए श्रद्धा के साथ उसका पालन करना होता है। जैसे - शाकाहारी भोजन करना, झुट नहीं बोलना, अपने से बड़ो का आदर करना, आशय लोंगो की सहायता करना इत्यादि। धर्म की रक्षा के लिए अधर्मी के समक्ष खड़ा होना आवश्यक है भले ही वो भाई ही क्यों न हो।

12:1:13:प्रश्न और अभ्यास - घडी के पुर्जे :3

घड़ी समय का ज्ञान कराती है। क्या धर्म संबंधी मान्यताएँ या विचार अपने समय का बोध नहीं कराते?

उत्तर - घड़ी का कार्य समय का ज्ञान देना है। यह समय बताता है, इसलिए यह मूल्यवान है। लोग केवल इसका उपयोग समय देखने के लिए करते हैं। अगर घड़ी ने समय दिखाना बंद कर दिया, तो लोगों के लिए घड़ी का मूल्य समाप्त हो जाएगा। इसी तरह, धार्मिक विश्वास या विचार उत्पन्न होने लगे। अलग-अलग धर्मो को अलग-अलग तरीकों से विभाजित किया गया था। धर्म परोपकार और मानवता पर

आधारित था। लेकिन आडंबर ने इसमें जगह बनाना शुरू कर दिया। धर्म को अस्तित्व में लाया गया ताकि लोग बुरे पक्ष में न जाएं। यह सब इस बात का प्रतीक है कि लोगों ने इसे उस समय क्यों स्वीकार किया और इसकी उत्पत्ति और विकास क्यों हुआ। वे इसे अपनी समझ के अनुसार अलग-अलग दिशाओं में ले जाते हैं। उस समय लोगों पर उनका बहुत गहरा प्रभाव था और इसीलिए हम इसका समर्थन करते हैं।

12:1:13:प्रश्न और अभ्यास - घडी के पुर्जे :4

धर्म अगर कुछ विशेष लोगों वेदशास्त्र, धर्माचार्यों, मठाधीशों, पंडे-पुजारियों की मुट्ठी में है तो आम आदमी और समाज का उससे क्या संबंध होगा? अपनी राय लिखिए।

उत्तर - धर्म अगर कुछ विशेष लोगों वेद्शास्त्रग्य धर्माचार्यों ,मठाधीशों ,पण्डे -पुजारियों की मुठी में है तो आम आदमी और समाज का उससे क्या सम्बन्ध होगा मेरी रे यह कि-जहाँ जहाँ धर्म है वहीँ विजय है क्यूंकि जो अधर्म के रास्ते पर चलते हैं जैसे चोरी करना दुष्कर्म करना कहीं डाके डालना बैंकों में लूट करवाना राह चलते व्यक्ति को महज दस हज़ार रुपये

के लिए गोलों मार देना । और इसतरह के अनगिनत भ्रष्ट आचरण वाले जब किसी मठ या किसी धर्म संस्थान में पहुँचते हैं ।तो उन्हें कभी भी वहीँ पर ज्ञान होगा कि हम जो कर रहे हैं वे सब गलत है । क्यूंकि धर्माच्य्र लोग आखिर धर्म की ही बातें तो करते है । भ्रष्टाचार कैसे मिटाए ये उनकी मूल बातें हुआ करती हैं । गीता में भगवान् श्री कृष्ण ने कहा है ;- यदा यदा ही धर्मस्य ,ग्लानिर्भवतिभारत अभुथानामाधार्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम " मठाधीशों के लिए ये बात जरूर है कि वे बातें तो बहुत ही अछि करते हैं प्रवचन तो काफी आकर्षक होते हैं ।भक्तगण सम्मोहित होकर ढेर सारा चढ़ावा चढाते है ।मेरा यही कहना है कि धर्म को कभी नहीं भूलना चाहिए वही एक सच्चा मार्ग दिखाता है ।

12:1:13:प्रश्न और अभ्यास - घडी के पुर्जे :5

'जहाँ धर्म पर कुछ मुट्ठीभर लोगों का एकाधिकार धर्म को संकुचित अर्थ प्रदान करता है वहीं धर्म का आम आदमी से संबंध उसके विकास एवं विस्तार का द्योतक है।' तर्क सहित व्याख्या कीजिए।

उत्तर - जहां मुट्ठी भर लोगों द्वारा धर्म का एकाधिकार है। यह वास्तव में एक संकीर्ण अर्थ देता है। तब परिणाम यह

होगा कि सभी चार धर्मों के लोग आपस में विवाद करते रहेंगे क्योंकि हर धर्म में मुट्ठी भर लोगों की ही अवस्था होती है। दूसरे उनका अनुसरण करते हैं और किसी पर धर्म नहीं थोपते। धर्म को कोई दूसरे के माथे पर बल नहीं दे सकता। उदाहरण के लिए: हर रोज ये धार्मिक लोग प्रचार करते हैं कि किसी को झूठ नहीं बोलना चाहिए, माता-पिता को बुजुर्गों की सेवा तथा सम्मान करना चाहिए। बच्चों को प्यार करना चाहिए और पृथ्वी की हरियाली की रक्षा करनी चाहिए लेकिन व्यवहार में क्या हो रहा है। वे सब कुछ मना करते हैं जो मैं खुद करता हूं। मैं अपने माता-पिता को वर्ष में याद नहीं करता लेकिन गरीबों में कंबल वितरित करता हूं। हरियाली को बचाना है। लेकिन उनके घर का शानदार फर्नीचर अच्छी लकड़ी का है। धर्म का विकास तभी हो सकता है जब धर्म का नाम लिया जाए लेकिन जो बातें बोली जाती हैं उन्हें लागू किया जाना चाहिए।

12:1:13:प्रश्न और अभ्यास - घडी के पुर्जे :6

निम्नलिखित का आशय स्पष्ट कीजिए-

(क) 'वेदशास्त्रज्ञ धर्माचार्यों का ही काम है कि घड़ी के पुर्ज़े जानें, तुम्हें इससे क्या?'

(ख) 'अनाड़ी के हाथ में चाहे घड़ी मत दो पर जो घड़ीसाज़ी का इम्तहान पास कर आया है, उसे तो देखने दो।'

(ग) 'हमें तो धोखा होता है कि परदादा की घड़ी जेब में डाले फिरते हो, वह बंद हो गई है, तुम्हें न चाबी देना आता है न पुर्ज़े सुधारना, तो भी दूसरों को हाथ नहीं लगाने देते।'

उत्तर -

(क) आज के समय में धर्म के बारे में जानने की जिम्मेदारी धर्मगुरुओं ने ली है। इसके बाद वे अपनी सुविधा के अनुसार हमें इसके बारे में जानकारी देते हैं। इस तरह वे पहरेदार की तरह हो जाते हैं जो घड़ी को सही कर सकते हैं। सही नहीं। लेखक लोगों को बताता है कि हमें भी इस बारे में पता होना चाहिए। धर्म किसी एक की संपत्ति नहीं है। हमें बिना मतलब के ऐसे धर्मगुरुओं को महत्व देने से बचना चाहिए।

(ख) लेखक कहते है की किसी मुर्ख को अपनी घडी नहीं देते हो संह परन्तु गाढ़ी बनाने वाले को तो देखने दो। अर्थात लेखक कहता है कि जो व्यक्ति मुर्ख है उसे तुम धर्म के बारे में समझाने से मना करते हो । परन्तु जो व्यक्ति इस विषय में जानता है जिसने इस विषय में

जानकारी हासिल की है तुम उसे कुछ क्यूँ नहीं बताने देते हो।

(ग) इसका आशय है कि आप वेद वेदांतों के बारे में बात करते हैं, आप संस्कृति, सभ्यता के बारे में बात करते हैं, लेकिन आप इस बारे में कुछ नहीं जानते हैं। आप वेद वेदांतों में विद्‍यमान ज्ञान के रक्षक बन जाते हैं, लेकिन आपको स्वयं इसके बारे में कुछ भी पता नहीं है। यदि कोई इसके बारे में समझना चाहता है, तो आप उसे इसे समझने नहीं देते हैं, इसलिए हमें इसे सुधारना चाहिए। यह स्थिति मूर्खता से भरी है।

ढेले चुन लो

12:1:13:प्रश्न और अभ्यास - ढेले चुन लो :1

वैदिककाल में हिंदुओं में कैसी लौटरी चलती थी जिसका ज़िक्र लेखक ने किया है।

उत्तर - उस काल में एक हिंदू युवक शादी करने के लिए लड़की के घर जाता था। यह अभ्यास एक लॉटरी की तरह

था। वह अपने साथ ढेले लेकर जाता था। इन ढेले की मिट्टी अलग थी। केवल लड़के को ही मिट्टी के बारे में ज्ञान था कि कहां की मिटटी शामिल है। इनमें मिट्टी, खेत, वेदी, चौराहे और गौशालाएँ शामिल थीं। मिट्टी के हर ढेले का अपना अर्थ था। अगर एक महिला गौशाला की मिट्टी का ढेले चुनती तो इससे पैदा हुए व्यक्ति को पशुओं से धनवान माना जाता था। उस महिला का बेटा एक विद्वान बन जाएगा, जो वेदी मिट्टी से बनी गांठ का चयन करेगी। मसान की मिट्टी से गांठ चुनना अशुभ   माना जाता था। इसलिए हर ढेले के साथ एक मान्यता जुड़ी होती है। यह प्रथा लॉटरी के समान थी। लेखक ने इस प्रथा को लॉटरी से जोड़ा है।

12:1:13:प्रश्न और अभ्यास - ढेले चुन लो :2

'दुर्लभ बंधु' की पेटियों की कथा लिखिए।

उत्तर - दुर्लभ बंधू एक नाटक है । उसके सामने तीन पेटियां रख दी जाती है । प्रत्येक पेटी अलग अलग धातु की बनी होती है । इसमें से एक सोना ,दूसरी चांदी तथा तीसी लोहे से बनी होती है । प्रत्येक व्यक्ति को यह स्वतंत्रता है कि वह अपनी मनपसंद पेटी को चुनें । अकडबाज नामक व्यक्ति सोने

की पेटी को चुनता है तथा वह खाली हाथ वापस जाता है I एक अन्य व्यक्ति चांदी की पेटी चुनता है और लोभ के कारन उसे भी लौटना पड़ता है Iइसके विपरीत जो सच्चा और परिश्रमी होता है वह लोहे की पेटी चुनता है I इसके फलस्वरूप उसे घुड़दौड़ में प्रथम पुरस्कार प्राप्त होता है।

12:1:13:प्रश्न और अभ्यास - ढेले चुन लो :3

जीवन साथी का चुनाव मिट्टी के ढेलों पर छोड़ने के कौन-कौन से फल प्राप्त होते हैं।

उत्तर - ढेला चुनना प्राचीन समय की परम्परा है I उस काल में एक हिंदू युवक शादी करने के लिए लड़की के घर जाता था। यह अभ्यास एक लॉटरी की तरह था। वह अपने साथ ढेले लेकर जाता था। इन ढेले की मिट्टी अलग थी। केवल लड़के को ही मिट्टी के बारे में ज्ञान था कि कहां की मिटटी शामिल है। इनमें मिट्टी, खेत, वेदी, चौराहे और गौशालाएँ शामिल थीं। मिट्टी के हर ढेले का अपना अर्थ था।

(क) मनोवांछित संतान न मिलने पर पछताना पड़ता होगाI

(ख) अच्छी लड़कियां इस प्रथा के कारन हाथ से निकल जाती होंगी**।**

(ग) अपनी मुर्खता समझ में आती होंगी**।**

12:1:13:प्रश्न और अभ्यास - ढेले चुन लो :4

मिट्टी के ढेलों के संदर्भ में कबीर की साखी की व्याख्या कीजिए-

पत्थर पूजे हरि मिलें तो तू पूज पहार।
इससे तो चक्की भली, पीस खाय संसार।।

उत्तर - कबीर जी के इस दोहे का आशय यह की यदि पत्थर पूजने से हरी मिल जाते तो वह पहाड़ पूजते। क्योँकि इस से हरी के दर्शन शीघ्र होते है। कबीर जी कहते है की वे पत्थर से अच्छा घर की चक्की को पूजना सही समझते है। क्योँकि यह संसार का पेट भरती है। इसी प्रकार लेखक कहते है की मिटटी के ढेले से मन मुताबिक बचे मिलते तो फिर क्या बात है। यह सिर्फ एक आडम्बर है। इस प्रकार कबीर जी का यह दोहा लेखक की बात को सार्थक करता है।

PAGE 86

12:1:13:प्रश्न और अभ्यास - ढेले चुन लो :5

जन्मभर के साथी का चुनाव मिटटी के ढेले पर छोड़ना बुद्धिमानी नहीं है। इसलिए बेटी का सिकधित होना अनिवार्य है। 'बेटी बचायो , बेटी पढयो ' के सन्दर्भ में विचार कीजिये।

उत्तर - बेटी बचाओ बेटी पढाओ ये मात्र नारा ही नहीं है। हर माता पिता को बेटियों को शिक्षित करना चाहिए। पढाई लिखी पर पुत्री का भी उतना ही अधिकार है जितना पुत्र का**।** अगर किसी बेटी के किसी विषम परिस्थिति में पद जाती है तो उस समय उसकी शिक्षा ही उसे बचाती है **।** पहले वाली वो प्रथा जो ढेले से पत्नी चुनने की प्रथा थी वो बिलकुल ही असंगत जान पड़ती है **। "**अंधविश्वास को छोडो**,**मानवता से नाता जोड़ो बेटी घर की लक्ष्मी है **,**घर घर की सरस्वती है इसे पढाओ इसे बचाओ **।"**

12:1:13:प्रश्न और अभ्यास - ढेले चुन लो :6

निम्नलिखित का आशय स्पष्ट कीजिए-

(क) 'अपनी आँखों से जगह देखकर, अपने हाथ से चुने हुए मिट्टी के डगलों पर भरोसा करना क्यों बुरा है और लाखों

करोड़ों कोस दूर बैठे बड़े-बड़े मट्टी और आग के ढेलों-मंगल, शनिश्चर और बृहस्पति की कल्पित चाल के कल्पित हिसाब का भरोसा करना क्यों अच्छा है।'

(ख) 'आज का कबूतर अच्छा है कल के मोर से, आज का पैसा अच्छा है कल की मोहर से। आँखों देखा ढेला अच्छा ही होना चाहिए लाखों कोस के तेज पिंड से।'

उत्तर -

(क) कवि का आशय है की यदि मिट्टी का ढेला चुनना अन्धविश्वास है तो ग्रहो और नक्षत्रो के हिसाब से कार्य करना भी अन्धविश्वास है। जिन ग्रहो तथा नक्षत्रों को हमने देखा ही नहीं उनपे भरोसा कैसे कर सकते है। इसी प्रकार यदि अगर हम एक बार मीठी के ढेले को गलत मानते है तो दूसरी बात अपने आप गलत सिद्ध हो जाएगी।

(ख) यह वात्स्यायन ने कहा था। उनके अनुसार, इस समय हमारे पास जो वस्तु है, हमें केवल उसे सही कहना चाहिए। हमारे आने वाले कल या बीते हुए कल में मौजूद वस्तु को कहना मूर्खता है। कल सोने और चांदी की

मोहरे चलती थी आज रुपया चलता है। इस प्रकार जो हमने देखा नहीं उसपर भरोसा नहीं करना चाहिए।